सफेद कबूतर

न्गूयेन क्वांग थान

वियतनाम के प्रसिद्ध रचनाकार न्गूयेन क्वांग थान की कहानी 'सफेद कबूतर' युद्ध की पृष्ठभूमि में जिजीविषा और आशा की किरण दिखाती है । कहानी अंत तक हमें विश्वास और अविश्वास के तनाव में उलझाकर अंततः सकारात्मक सोच पर समाप्त होती है । छत्तीस वर्षों तक युद्ध की विभीषिका झेल चुके देश वियतनाम से इतनी सुंदर, सशक्त और स्वस्थ जीवन मूल्य दर्शाती रचना 'सफेद कबूतर' वास्तव में न्गूयेन क्वांग थान के लिए एक उपलब्धि है । इस कहानी का हिंदी रूपांतर सुपरिचित कथाकार जितेंद्र भाटिया ने किया है ।

जब वह अपने गाँव लौटा तो वही आठ साल पुराना फौजी झोला उसकी पीठ पर कसा था ।

उसे याद आया कि फौज की ओर से मिलने वाला यह उसका पहला झोला था । जिला हेडक्वार्ट्स से उसे वर्दी, बेल्ट, सितारों वाली हेलमेट और कैनवस के जूतों के साथ यह झोला दिया गया था । आने वाले सिपाही जीवन की सारी जरूरतों को उस झोले में भर चुकने के बाद उसने अपने अफसर से कुछ देर की छुट्टी माँगी थी, ताकि जाने से पहले आखिरी बार वह घर का चक्कर लगाकर आ सके । घर नजदीक ही था, लेकिन वहाँ पहुँचते ही सबसे पहले उसका ध्यान सुअरबाड़े की ओर गया था, जहाँ बाँस की छत से एक लकड़ी खुल गई थी । झोले को वहीं दरवाजे पर छोड़ कर उसने जल्दी-जल्दी, बहुत एहतियात के साथ उस लकड़ी को रस्सी से कसकर यूँ बाँधा था, जैसे उसे सदियों तक न खुलने की मजबूती दे रहा हो, और उसके बाद वह वापस अपने दो कमरों के छोटे-से घर की ओर दौड़ गया था ।

रसोईघर के दरवाजे से होता हुआ वह कमरे में घुसा तो भीतर के नजारे ने उसे स्तंभित कर दिया । उसने देखा....पत्नी ने साजो-सामान से लैस उस झोले को अपनी पीठ पर कस लिया था और वह दीवार पर लगे आईने में अपनी इस फौजी छवि का जायजा ले रही थी । उसने इससे पहले कभी अपनी पत्नी को इतनी शरारती मुद्रा में नहीं देखा था ।

कुछ देर तक वहीं चुपचाप खड़ा वह पत्नी के मूकाभिनय को देखता रहा था । उसने सिर

पर उसकी लाल बिल्ले वाली टोपी भी लगा ली थी । जब वह कमर में बेल्ट बाँधने को झुकी थी तो आगे बढ़कर उसने पीछे से अपनी पत्नी को बाँहों में भर लिया था ।

पत्नी का कोमल जिस्म, उसकी बाँहों के दबाव तले पिघलता हुआ-सा महसूस हुआ था । फिर दूसरे ही क्षण वह शरमाकर उसकी गिरफ्त से बाहर निकली थी और पीठ पर फँसे उस झोले को उतारने की कोशिश करने लगी थी । बिस्तर के कोने पर बैठा वह पत्नी की इस चंचलता पर धीरे-धीरे मुस्कराता रहा था ।

उन्होंने साथ-साथ खाना खाया था । फिर उसके कुछ ही देर बाद वह जिला हेडक्वार्ट्स की ओर लौट गया था, जहाँ लाम की ओर जाने वाली बस उसका इंतजार कर रही थी ।

गाँव की हवा के आखिरी झोंकों का स्पर्श पाने के लिए उसके साथियों ने खिड़कियों के शीशे खोल दिए थे और उनमें से कई एक तो दबे-दबे स्वरों में अपने प्रिय गीत भी गुनगुनाने लगे थे.....

यह आठ बरस पहले की बात थी और अब इतने अरसे के बाद, उसी पुराने झोले को पीठ पर कसे वह फिर से घर लौट रहा था । घिसकर तार-तार हो चुके झोले के स्ट्रैपों की मजबूती बरकरार रखने के लिए लगाए गए लोहे के सख्त तार लगातार उसके कंधे में गड़ रहे थे, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी । उसकी आँखों के सामने बार-बार पीठ पर झोला कसे, आईने में अपने आपको निहारती पत्नी की वह आठ साल पुरानी छवि उभर जाती । बचपन से ही उसे पुरानी चीजों को सँभालने और उनका ख्याल रखने की आदत थी और शायद यह इसी आदत का परिणाम था कि वह पुराना झोला अब तक उसके काम आ रहा था ।

पिछले आठ सालों में सिर्फ एक बार वह उस झोले से अलग हुआ था । तब उसे चोरी-छिपे सैगोन शहर में घुसना था । शहर के बाहर एक भरोसेमंद बुढ़िया को थैला सौंप कर वह स्वयं भेष बदलकर शहर में घुस गया था । सैगोन में कई महीने उसने छिप-छिपकर गुजारे थे, कभी सड़क पर फेरी लगाते हुए तो कभी रिक्शा चालक या गोदी मजदूर की पोशाक पहनकर । महीनों उसे फुटपाथ पर या पुलों के नीचे या होटलों के बाहर सोना पड़ा था । और पूरा एक हफ्ता तो उसने तान सोन न्हात के बारूद डिपो में बमों के ढेर के नीचे छिपकर तफरीही अंदाज में बमों के पलीते को दाँतों के बीच चबाते हुए गुजारा था । लेकिन इन सारे कठिन अनुभवों के बीच भी आईने में अपने आपको निहारती पत्नी और उसकी पीठ पर कसे झोले की वह तस्वीर लगातार उसके साथ बनी रही थी ।

बाद में जब उनका दस्ता सैगोन से पीछे हट गया था तो उसने उस बुढ़िया माँ से अपना झोला वापस ले लिया था । फौजी ट्रक में बैठकर जब वे विंच की ओर रवाना हुए थे तो उसने अपने झोले के साथ एक छोटी-सी गुड़िया बाँध ली थी । इसके अलावा उसने झोले में कुछ मीटर

पर उसकी लाल बिल्ले वाली टोपी भी लगा ली थी । जब वह कमर में बेल्ट बाँधने को झुकी थी तो आगे बढ़कर उसने पीछे से अपनी पत्नी को बाँहों में भर लिया था ।

पत्नी का कोमल जिस्म, उसकी बाँहों के दबाव तले पिघलता हुआ-सा महसूस हुआ था। फिर दूसरे ही क्षण वह शरमाकर उसकी गिरफ्त से बाहर निकली थी और पीठ पर फँसे उस झोले को उतारने की कोशिश करने लगी थी । बिस्तर के कोने पर बैठा वह पत्नी की इस चंचलता पर धीरे-धीरे मुस्कराता रहा था ।

उन्होंने साथ-साथ खाना खाया था । फिर उसके कुछ ही देर बाद वह जिला हेडक्वार्ट्स की ओर लौट गया था, जहाँ लाम की ओर जाने वाली बस उसका इंतजार कर रही थी ।

गाँव की हवा के आखिरी झोंकों का स्पर्श पाने के लिए उसके साथियों ने खिड़कियों के शीशे खोल दिए थे और उनमें से कई एक तो दबे-दबे स्वरों में अपने प्रिय गीत भी गुनगुनाने लगे थे.....

यह आठ बरस पहले की बात थी और अब इतने अरसे के बाद, उसी पुराने झोले को पीठ पर कसे वह फिर से घर लौट रहा था । घिसकर तार-तार हो चुके झोले के स्ट्रैपों की मजबूती बरकरार रखने के लिए लगाए गए लोहे के सख्त तार लगातार उसके कंधे में गड़ रहे थे, लेकिन उसे इसकी परवाह नहीं थी । उसकी आँखों के सामने बार-बार पीठ पर झोला कसे, आईने में अपने आपको निहारती पत्नी की वह आठ साल पुरानी छवि उभर जाती । बचपन से ही उसे पुरानी चीजों को सँभालने और उनका ख्याल रखने की आदत थी और शायद यह इसी आदत का परिणाम था कि वह पुराना झोला अब तक उसके काम आ रहा था ।

पिछले आठ सालों में सिर्फ एक बार वह उस झोले से अलग हुआ था । तब उसे चोरी-छिपे सैगोन शहर में घुसना था । शहर के बाहर एक भरोसेमंद बुढ़िया को थैला सौंप कर वह स्वयं भेष बदलकर शहर में घुस गया था । सैगोन में कई महीने उसने छिप-छिपकर गुजारे थे, कभी सड़क पर फेरी लगाते हुए तो कभी रिक्शा चालक या गोदी मजदूर की पोशाक पहनकर। महीनों उसे फुटपाथ पर या पुलों के नीचे या होटलों के बाहर सोना पड़ा था । और पूरा एक हफ्ता तो उसने तान सोन न्हात के बारूद डिपो में बमों के ढेर के नीचे छिपकर तफरीही अंदाज में बमों के पलीते को दाँतों के बीच चबाते हुए गुजारा था । लेकिन इन सारे कठिन अनुभवों के बीच भी आईने में अपने आपको निहारती पत्नी और उसकी पीठ पर कसे झोले की वह तस्वीर लगातार उसके साथ बनी रही थी ।

बाद में जब उनका दस्ता सैगोन से पीछे हट गया था तो उसने उस बुढ़िया माँ से अपना झोला वापस ले लिया था । फौजी ट्रक में बैठकर जब वे विंच की ओर रवाना हुए थे तो उसने अपने झोले के साथ एक छोटी-सी गुड़िया बाँध ली थी । इसके अलावा उसने झोले में कुछ मीटर

लंबे कपड़े का एक टुकड़ा और एक छोटा-सा पाना या स्पैनर भी डाल लिया था । गाँव की जिंदगी में कपड़े की अपनी उपयोगिता थी और स्पैनर से उसने न जाने कितने अमरीकी बमों के 'डिटोनेटरों' का पलीता निकाला था । झोले में कुछ दूसरा फुटकर सामान भी था । छोटे हत्थों वाला एक अमरीकी डिजाइन का फौजी खुरपा, जो बागवानी में या मेढक पकड़ने के काम में आ सकता था; पैराशूट के सफेद कपड़े का एक टुकड़ा, जिसे वह अपने घर के सामने टाँगने की सोच रहा था, और एक भारी छुरी, जिसके बारे में उसके साथियों की राय थी कि यह जरूर किसी-न-किसी समय अमरीकी राजदूत मार्टिन के रसोईघर में इस्तेमाल की जाती रही होगी ।

इतने बरसों बाद अपने झोले को पीठ पर लादकर गाँव की ओर लौटते हुए उसे काफी गर्व महसूस हुआ कि वह झोला अब भी उसके साथ है । देखा जाए तो उसके लिए वह झोला उसमें रखे सामान से भी ज्यादा कीमती था । उस झोले के साथ उसकी पत्नी की पुरानी यादें जुड़ी थीं ।

अपने गाँव की जिंदगी के बारे में सोचते हुए उसके मन में एक अनकही उत्सुकता छलकने लगी । शायद अब वह अपने इलाके के 'उत्पादन दस्ते' का सरदार चुन लिया जाए । यदि ऐसा न भी हुआ तो भी उसकी जिंदगी कम-से-कम पहले से बेहतर होगी, ऐसा उसे विश्वास था, क्योंकि लड़ाई में उनकी जीत हुई थी । उसके खेतों में अब खूब धान उगेगा और वे लोग मजे में गुजर कर सकेंगे ।

ऐसा नहीं कि लड़ाई के मोर्चे पर उसे पत्नी के बारे में सोचते हुए कभी कोई चिंता नहीं हुई थी । लौटते समय जब वह ट्रेन में विन्ह से थान होआ आ रहा था तो उसके सामने बैठी औरतें किसी स्त्री से बात कर रही थीं, जिसने पति के लौटने का इंतजार नहीं किया और दुबारा शादी कर ली । उनकी बातों को सुनते हुए वह असहज हो उठा था और उसे अपनी पत्नी की बेसाख्ता याद आई थी । साथ ही अपने पर गुस्सा भी महसूस हुआ था कि इन आठ वर्षों में उसने अपनी पत्नी को खत क्यों नहीं लिखा । लेकिन सारी असहजता के बावजूद उसे विश्वास था कि पत्नी उसकी आठ वर्षों की खामोशी के बावजूद उसी तरह उसका इंतजार कर रही होगी ।

अपने घर के बाहर फैले पेड़ों के झुरमुट को तो वह पहचान भी नहीं पाया । जब वह गया था तो पपीते का वह पौधा हाथ भर का भी नहीं था । अब वही पौधा पेड़ बन गया था और ऊपर से नीचे तक फलों से लदा था । बाकी पेड़ भी बड़े हो गए थे । जब वह गया था तो उसकी पत्नी ने मजाक में कहा था कि काश, वह जल्दी से गर्भवती होकर उन खट्टी इमलियों का भरपूर मजा ले सके ! उसी पेड़ से अब सुनहरी रंग की लंबी-लंबी, पकी हुई इमलियाँ लटक रही थीं । उसने नजर उठाकर अपने घर की ओर देखा तो दीवारों पर पुता पीले रंग का चूना उसे बहुत साफ-सुथरा लगा । उसने अंदाजा लगाया कि यह चूना उसकी पत्नी ने जरूर महीने में एक बार जिले के शहर में लगने वाली हाट में खरीदा होगा ।

दरवाजे को धकेलकर वह घर के अंदर घुस गया । अभी नौ ही बजे थे और कमरे में ठंढक थी । अपनी पत्नी को चौंकाने के इरादे से वह केलों के झुरमुट के बीच से दौड़ता चला आया था और अब उसका पूरा जिस्म पसीने से तर-ब-तर था । खाली कमरे में ठंढे बिस्तर पर बैठते हुए उसे अचानक एक गहरे अकेलेपन का एहसास हुआ । कमरे की हर चीज पहले से काफी बड़ी और व्यवस्थित दिखाई दे रही थी ।

धान के बड़े पिटारे पर पुराना पुश्तैनी ताला लटक रहा था । उसे पता था कि उसकी पत्नी पिटारे की चाबी कहाँ रखती है, लेकिन उसने भीतर के धान का अंदाजा लेने के लिए उसे सिर्फ ठकठका कर देखा । नवंबर में ताजा फसल कटती थी और यह फसल से पहले का आखिरी अक्तूबर का महीना था । इस हिसाब से पिटारे में अब भी काफी धान था ।

पीछे तार पर कपड़े सूख रहे थे । उसने अपनी पत्नी के पुराने ब्लाउज पहचान लिए । एक नया स्वेटर भी था । शादी के समय वाला स्वेटर शायद घिसकर फट गया होगा ।

अचानक उसकी नजर तार पर सूखते, बच्चों के नए-नए पाजामों पर गई तो उसका दिल बल्लियों उछल पड़ा । काँपते हाथों से उसने एक पाजामा उतारा और उससे बच्चे की ऊँचाई का अंदाज लगाने की कोशिश करने लगा । ठीक उसी वक्त हाथ में गुलेल थामे वह लड़का स्वयं कमरे में दाखिल हुआ और एक अजनबी को पाजामा टटोलते देखकर ठिठक गया ।

वे दोनों काफी देर तक निश्शब्द एक-दूसरे की ओर देखते रहे । लड़का घबराकर चिल्लाने को हुआ था, फिर अचानक रुक गया था, क्योंकि उसके सामने खड़ा अजनबी शायद चोर नहीं था । कुछ क्षणों तक सोचने के बाद उसने अंदाज लगा लिया था कि यह व्यक्ति कहीं उसका पिता तो नहीं ! उसे मालूम था कि उसकी माँ उसके पिता को बहुत याद करती है । एक बार तो उसने पिता की वर्दी भी पहन ली थी और फिर आईने में अपने-आपको देखते हुए उससे पूछा था कि वह पिता जैसी लगती है या नहीं । लड़के ने समर्थन में सिर हिला दिया था, क्योंकि उस वर्दी में माँ उसे किसी सिपाही जितनी ही चुस्त और सजीली नजर आई थी ।

ठिठककर उस अजनबी की ओर देखते हुए लड़के को लगा कि अगर वह उसका पिता ही है तो उसे सबसे पहले अपनी माँ को बुला लाना चाहिए । यह सोचकर वह बिना कुछ भी बोले तेजी से मुड़ा और वहाँ से बेतहाशा भाग निकला ।

अचंभे में खड़ा पिता दौड़कर जाते लड़के को देखता रह गया । उसे देखते हुए उसे उस सफेद कबूतर की याद हो आई, जिसे उसने सुबह ही नहर के ऊपर से उड़कर जाते हुए देखा था । फिर अचानक उसे डर-सा महसूस हुआ कि यह किसी गहरी निराशा का पूर्व-संकेत तो नहीं है । हड़बड़ाहट में बाहर निकलते हुए उसका पैर दहलीज से टकराया, लेकिन सारी जल्दबाजी के बावजूद उसे केले के पेड़ों के पीछे गुम होते उस लड़के की एक झलक मात्र ही दिखाई दी ।

''सुनो...सुनो....।' वह लड़के का नाम लेकर चिल्लाना चाहता था, लेकिन नाम उसे मालूम कहाँ था ?

वह लौटकर बिस्तर पर बैठ गया । बैठते-बैठते उसे दीवार पर टँगे टेढ़े आईने में अपना सकपकाया चेहरा दिखाई दिया तो सारी घबराहट के बावजूद उसके चेहरे पर मुस्कराहट उभर आई ।

बिस्तर पर फैले कंबल और तकिए में से एक हल्की-हल्की खुशबू उठ रही थी । नीचे पैरों तले ठंढी जमीन थी । उस ठंढक को पैरों से महसूस करते हुए उसे यकीन आया कि यह सब सपना नहीं, बल्कि वह सचमुच अपने घर में, अपने ही बिस्तर पर बैठा है । कनखियों से आईने में अपने-आपको देखते हुए उसने एक राहत की साँस ली । इस क्षण को अपनी कल्पनाओं में वह इससे पहले भी न जाने कितनी बार जी चुका था ।

उसे लगा कि पिछले आठ वर्षों में उसने जो कुछ खोया था, वह सब उसे मिल गया है । और इस सबके ऊपर वह लड़का था, आठ वर्षों की लंबाई तक फैले आसमान पर किसी सफेद कबूतर की तरह उड़ता हुआ । उसका नाम उसे मालूम नहीं था, लेकिन फिर भी उसके चेहरे का एक-एक नक्शा जैसे उसका पहचाना हुआ था ।

इस बीच बाहर खेतों में दूसरी औरतों के बीच खड़ी उसकी पत्नी को किसी ने खबर दी थी कि एक सिपाही उसके घर की तरफ जाता देखा गया है । वह उलझन में पड़ गई थी कि यह सिपाही कौन हो सकता था ? उसका पति या कोई और ? अगर वह सिपाही उसका पति नहीं था, तब भी तो उससे उसका मिलना जरूरी था । हो सकता है वह बुरी खबर या मृत्यु का संदेश लाया हो, क्योंकि पिछले आठ वर्षों में पति का एक भी खत उसे नहीं मिला था ।

सिपाही के बारे में सोचते हुए उसे कुछ घबराहट-सी हुई, लेकिन फिर भी उस वक्त सब कुछ छोड़कर घर लौटना उसके लिए नामुमकिन था । दरअसल जिस जगह पर वह अन्य औरतों के साथ काम कर रही थी, उसी के नजदीक मिट्टी में सुबह एक अमरीकी बम निकला था, जिसके फटने से एक सिपाही के साथ दो औरतें जख्मी हो गई थीं । धमाके से पहले किसी का ध्यान बम की ओर नहीं गया था, लेकिन बम के फटते ही चारों ओर भगदड़ मच गई थी । जख्मियों को अस्पताल पहुँचाया गया था और खुदाई का काम फिर से शुरू हुआ ही था कि कुछ मजदूरों ने चिल्लाकर उसे अपनी ओर बुलाया था । वह उस टोली की अगुआ थी और खुदाई का काम उसी की देखरेख में चल रहा था । चिल्लाते हुए मजदूरों मे बताया था कि खुदाई के मलबे के पास अभी-अभी उन्हें पहले से भी बड़ा एक और अनफटा बम मिला है ।

लोगों में फिर से भगदड़ मची थी तो उसने भोंपू की मदद से सबको शांत करने की कोशिश की थी । उसके प्रति आदर और सहानुभूति का भाव महसूस करते हुए लोग जहाँ-के-तहाँ

खड़े हो गए थे । क्या जिंदगी है बेचारी की, वे सब शायद सोच रहे थे । पति की आठ सालों से कोई खबर नहीं, हालाँकि अब सैगोन को आजाद हुए छह महीने होने को आए । लेकिन अब भी बेचारी कितनी लगन से काम कर रही है ! भागने वाले मजदूरों के गिरोह भी भोंपू पर उसकी आवाज सुनकर वापस लौट आए थे ।

लोगों को शांत करने के बाद वह तेजी से बम की ओर बढ़ी थी । [redacted] कि सबकी निगाहें उसी पर टिकी हुई हैं । बम की ऊपरी सतह से मिट्टी साफ करते हुए उसे जरा भी डर महसूस नहीं हुआ, हालाँकि उसे समझ में नहीं आ रहा था कि इतने बड़े बम का सामना कैसे किया जाए ?

तभी उसने बम पर लिखे अक्षर पढ़े थे तो उसका दिल दहल गया था । वह दो डिटोनेटरों वाला एम के 52 था, जिसे सुरंगें बिछाकर पीछे हटती अमरीकी फौज ने जमीन में गाड़ दिया था । इसी बम की मार ने उसके गाँव के कई हिस्सों को उजाड़ डाला था । दोनों सिरों पर लगे डिटोनेटरों में से किसी एक के भी दबने से बम फटकर चारों तरफ मौत की तबाही फैला सकता था ।

ठीक यही वह क्षण था, जब उसका बेटा दौड़ा चला आया था और टीले पर खड़ा होकर हाथ के इशारे से उसे बुलाने लगा था । वह अपनी जगह से हिल नहीं पाई थी, लेकिन बम की उपस्थिति से बेखबर लड़का उसकी ओर दौड़ता चला आ रहा था । शायद वह अपनी माँ को सब कुछ बताने के बाद ही चैन की साँस ले सकता था ।https://www.evidyarthi.in/

बेटे की बदहवासी को भाँपते हुए किसी भी अन्य माँ की तरह वह हड़बड़ाई थी और उसे एक निश्चित दूरी पर रोक देने के इरादे से वह बम को वहीं छोड़कर लड़के के पास तक दौड़ गई थी ।

''माँ...माँ !'' लड़के ने बमुश्किल हकलाते हुए कहा था, ''पापा लौट आए हैं !''

जरा देर के लिए उसे समूची दुनिया चक्कर खाती हुई-सी लगी थी, लेकिन फिर दूसरे ही क्षण उसने अपने-आपको सँभाल लिया था और संतुलित स्वर में लड़के से कहा था, ''अच्छा !.....तब तुम वापस जाओ । तुम्हारे पापा तुम्हारे लिए कोई-न-कोई तोहफा जरूर लाए होंगे ।''

पति हो या कोई और, वह इस हालत में उस जगह को छोड़ कर नहीं जा सकती थी । लेकिन घर में पति के लिए अब एक मिनट का इंतजार करना भी असंभव हो गया था । पता नहीं लाम पर पिछले आठ वर्ष उसने कैसे गुजारे थे ! जरा देर रुककर उसने कुछ सोचा था और फिर कंधे पर उसी झोले को कसकर वह पत्नी को ढूँढ़ने के इरादे से घर से बाहर निकल आया था ।

खेतों के पास जमी भीड़ को देखकर वह भी उसी ओर आ गया । एक बूढ़े ने उसे देखकर 'कौन है ?' पुकारा, और फिर जरा देर में ही सबने उसे पहचान लिया था । आठ सालों

की विस्मृति के बावजूद वे उसे उसके प्यार के नाम से पुकारने लगे थे । सबकी निगाहें फौजी लिबास पर टिकी थीं और वे हँस रहे थे । फिर उसकी पत्नी की ओर इशारा कर उन्होंने जोर-जोर की आवाजें देकर उसे बुलाने की कोशिश की ।

एक मिनट गुजर गया ।

उसने अपना झोला नीचे रखकर पत्नी के नजदीक जाने का उपक्रम किया, लेकिन इससे पहले ही वह दौड़कर उसके पास चली आई ।

''वहाँ एक एम के 52 है !'' पत्नी के पहले शब्द थे ।

''तो ?....'' वह कुछ हिचकिचाया, ''...उसे ठंढा करना है ?''

''लेकिन हमें पहली बार इस तरह का बम मिला है....'' पत्नी का स्वर डरा हुआ था ।

''तो क्या हुआ !.... बहुत आसान है उसे ठंढा करना । जैसे टिन का डब्बा खोलते हैं, बिलकुल वैसे ही । बस, स्पैनर को छह बार घुमाओ.....'' उसने हँसकर दाँत दिखाए ।

इन आठ बरसों में उसकी बोली में दक्षिणी प्रांतों वाला लहजा साफ झलकने लगा था । लेकिन उसकी पत्नी को समझने में कोई दिक्कत नहीं हुई, बल्कि वह उसकी खामोशी तक को समझ पा रही थी ।

''तो चलो फिर...''

पत्नी के उत्तर देने से पहले ही उसने अपना झोला खोल लिया था और उसमें से पहले खुरपा, फिर छुरी और आखिरकार वह स्पैनर बाहर निकाला था । स्पैनर को हाथ में लेकर झोला बंद करते-करते वह बोला, ''जरा भी अंदाजा नहीं था कि फौजी ट्रेनिंग यहाँ भी काम आएगी !''

खतरे के घेरे के बाहर, खोदी जाने वाली नहर के दोनों ओर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी । उसे लगा कि सबकी निगाहें उसी पर जमी हुई हैं ।

जैसे ही उसने वह जानलेवा बम के डिटोनेटर के पेंच में अपना स्पैनर फँसाया (वामको नदी पर उसके तीन साथी इसी एम के 52 के डिटोनेटर को खोलते हुए मारे गए थे) उसका मन हुआ कि पत्नी से पूछे, ''लड़के का नाम क्या है ?''

अक्तूबर की उजली धूप में पंख फड़फड़ाता वही सफेद कबूतर फिर एक बार उसके जेहन में कौंध गया । उसे पहले ही पत्नी से लड़के का नाम पूछ लेना चाहिए था, लेकिन पत्नी ने इस एम के 52 के चक्कर में उसे गड़बड़ा दिया था । खैर, अब तो उसे नाम मालूम हो ही जाएगा ।

बहुत सावधानी के साथ वह पहले डिटोनेटर का पेंच घुमाने लगा ।